ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

उत्तराधुनिक हिंदी कविता में स्त्री विमर्श के विविध आयाम

डॉ. वीणा जे

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, एस डी कॉलेज
आल्प्पुषा, केरल
drveenaprasad@gmail.com

मानव चरित्रांकन के सशक्त माध्यम के रूप में साहित्य के क्षेत्र में कविता का अपना विशिष्ट स्थान है, विशेष रूप से नारी की चरित्र गत विशेषताओं के अंकन में। काव्य लेखन शताब्दियों पहले शुरू होकर, अनेक परिवर्तनों से गुज़रकर आज नये कलेवर एवं विषय वैविध्य के साथ पाठकों के हृदय को छू लेता है। हिंदी कविता भारतीय समाज और व्यक्ति के मन और मस्तिष्क को छूती हुई निरंन्तर गतिशील होकर आगे की ओर अग्रसर हो रही है।

नारी जीवन सदा संघर्षमय रहा है। जीवन के उतार-चढ़ाव के विभिन्न रास्तों से गुज़रकर आज उसने अपना स्थान प्राप्त किया है। आरंभ से होकर आज तक कवियों ने नारी की हृदय गति को समझा, उसकी बेबसी को माना और उसका पक्षधर रहा। कवि भावना ने उनको अनेक रूप दिए। कुछ कवियों ने उसे क्षमाशील भूमिदेवी के रूप में देखा, और कुछों ने उग्र काली के रूप में। वात्मीकी, व्यास आदि पौराणिक रचनाकारों से लेकर आज तक कवियों ने नारी के अधिकार एवं अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहे! वात्मीकी ने सीता के त्याग के विषय में अपना स्त्रीपक्ष व्यक्त किया है। व्यास ने भी द्रौपदी के माध्यम से स्त्रियों के प्रति अपना आदर भाव किया है। आधुनिक कवि डॉ. पद्मासिंह की कविता 'सीता के राम' में भी स्त्री शक्ति द्रष्टव्य है। स्त्रीत्व के अभिमान की रक्षा के लिए सीता ने स्वयं देह त्याग कर दिया। राजा श्रीराम राज्याधिकार का कफन ओढे उसके देह त्याग को खड़े देखते रह गए। आज भी स्त्रियों की अग्नि परीक्षा हो रही है, और वह अपने अस्तित्व को पाने की लड़ाई लड़ रही है।

"सीता आज भी है
द्रौपदी आज भी है
फर्क यही
सीता आज वन में
भेजी नहीं जाती
घर में जला दी जाती है

द्रौपदी पांड़वों के बीच में नहीं
दहेज की लपेटों में बाँट दी जाती है"[1] (नलिनी पुरोहित)

आधुनिक कविता में नारी को नेपथ्य से मुख्यधारा में लाने का प्रयास है। निराला की 'तोड़ती पत्थर' कविता में पददलित स्त्री का जीवंत चित्रण है। "देखा मैं ने उसे इलाहाबाद के पथ पर, वह तोडती पत्थर" कहकर कवि ने सर्वहारा वर्ग का यथार्थ चित्र पाठकों के हृदय में अंकित किया है। प्रसाद ने कामायनी में 'इड़ा' के माध्यम से स्त्री की शक्ति और बुद्धि को सराहा[2] महादेवी वर्मा भी स्त्री विमर्श की नामी लेखिका है।

स्त्री शक्तिस्वरूपा है, जिसके बिना शिव का भी कोई अस्तित्व नहीं। वह कोमल है, लेकिन कमज़ोर नहीं 'सत्येंद्र' की कविता 'कन्या वंदन' में दुष्टों पर काली और शिष्टों पर भूमिदेवी की तरह बर्ताव करने वाली नारी के रूप को उद्घाटित किया है। स्त्री वास्तव में राख के भीतर दबी आग की चिनगारी है, जिसे राख समझकर छूऐं तो उसकी गर्मी महसूस होगी इतना ही नहीं, थोड़ी हवा मिलते ही वह सुलग जाएगी, जिसमें सर्वस्व भस्म कर देने की अदम्य शक्ति है। पुरुष वर्चस्व से परिपूर्ण समाज में स्त्री की शक्ति दमित है। परिवार की चार दीवारों के बीच रहकर वह घुटन महसूस कर रही है। जब कभी उसे अपनी अस्मिता की पहचान होगी तब वह जल उठेगी और आज़ादी की रोशनी के लिए आगे निकलेगी।

स्त्री लेखन आधुनिक परिप्रेक्ष्य से बाहर निकलकर उत्तराधुनिकता तक पहुँच चुका है। आज़ादी के बाद कवयित्रियों की संख्या बढ़ गयी है, जिसमें 'कात्यायनी', 'मधु धवन', 'निर्मला पुतुल, 'अनामिका', 'नीलेश रघुवंशी', 'नलिनी पुरोहित', 'चित्रा मुद्गल', 'मंजु गुप्ता' आदि गणनीय है, नामी भी। इन्होंने स्त्री संवेदना के विविध आयामों को अपनी काव्य रचना का विषय बनाया है। मधु धवन ने पुरुष अंहकार पर सवाल उठाकर लिखा है -

"सुनो तुम सदा भूल करते आ रहे थे,
कि नारी को अबला समझते रहे हो,
कि अफवाह की अन्धी गलि में
अपने अहंकार की बत्ती जलाते रहे हो ।" (मधु धवन)

बराबरी या तुल्यता की व्यवस्था पुरुष के लिए स्वीकार्य नहीं होती। शिक्षित समाज की भी यही धारणा है कि स्त्री पर पुरुष का सर्वाधिकार है। परिवार के भीतर दूसरों के लिए मोम की तरह वह जल जाये,

आखिरी सांस तक वह दूसरों के जीवन को उजागर करें, और अंत तक सामान्य भी रहे। यही पुरुष की ख्वाहिश है। कात्यायनी ने 'शोकगीत' कविता में स्त्री की यही दुरवस्था दिखाई है-

"प्यार किया एक मामूली आदमी की तरह
राशन- पानी जुटाया ।
सब्जियों की खरीददारी की ।
पूरी ज़िम्मेदारी के साथ
.....
सामान्य ही रहे अंत तक यूँ हुए असफल।"

"दुर्भाग्य से आज जो समाज बन रहा है, भूमंडलीकरण, बाज़ार एवं धन पर आधारित समाज उसमें स्त्री की स्वाधीनता, आत्मगौरव एवं संवृद्धि के रास्ते लगातार बंद हो रहे है। यह ऐसा समाज है, जहाँ वही टिकेगा जो बेचेगा और जो बिकने लायक होगा।" समाज में स्त्री सदा भोग्या रही है। यौन आकर्षण की कोरी चीज़ है, वह महज त्वचा है। दिन में वह पूज्या बन जाती है, और रात के अंधेरे में भोग्या भी। इसकी इच्छा-अनिच्छा, आशा-निराशा, सुख-दुःख इत्यादि का समाज में कोई माननीय स्थान नहीं है। हाथ पर हथियार लेकर ताकतवाला पुरुष अधिक शक्तिशाली बन गये, मगर परिवार का सारा बोझ कंधे पर लादकर स्त्री कमज़ोर हो गयी। पुरुष की महत्वाकांक्षाओं और सफलताओं के नीचे वह दबती चली गयी। अपने पुरुष को समाज में विजयी बनाकर वह स्वंय पराजित हो गयी। लेकिन धीरे-धीरे स्थिति बदली और अपनी अस्मिता की तलाश में स्त्री विजयी हुई। आज उसे अपनी शक्ति पर विश्वास है और वह आत्मनिर्भर भी है। उत्तराधुनिक स्त्री न भोग्या बनना चाहती है न पूज्या। वह बराबरी के लिए सघर्षरत है।

"मैं हूँ कौन
एक लघु-सा सरल प्रश्न
पर गगन-सा विस्तीर्ण
सागर-सा गहन, वेदों-सा आगम
पर्वत-सा दुर्गम्य।" (मधु धवन)

अनामिका ने स्त्री विमर्श को एक नया आयाम प्रदान किया है। 'बेजगह' कविता स्त्री की यह दुस्थिति व्यक्त करती है कि समाज में कहीं भी उसकी अपनी कोई जगह नहीं है। सब कहीं वह बेजगह ही है।

समाज में हर एक को अपनी अपनी जगह पर बिठाकर वह स्वयं बेजगह रह जाने के लिए विवश हो जाती है। वह केश और नाखून के समान है, जिसका बेजगह हो जाने पर कोई अस्तित्व ही नहीं -

"अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश औरतें और नाखून।" बेजगह (अनामिका)

स्त्री को सदा भोग्या बनाकर पुरुषसत्तात्मक समाज उसे शोषण का साधन बनाता रहता है और अंत में नाखून की तरह उपयोग्य शून्य समझकर उसे काट देता हैं। घर में हो या बाहरी समाज में, वह सदैव बेजगह रहने के लिए मज़बूर है। स्त्री बाल्यकाल में पिता के संरक्षण्वलय में रहे, यौवन में पति के और वृद्धावस्था में पूत्र के, उसे स्वतंत्रता के कोई हक भी नहीं -

"पित्रौ रक्षति कौमारे
भरत्रौ रक्षति यौवने
पुत्रौ रक्षति वार्धक्ये
ना स्त्री स्वातंत्र्यं अर्हति" (मनुस्मृति)

मनुस्मृति के इस सूक्त का समाज में गलत अन्वय हो रहा है। जीवन की किसी भी मोड़ में पिता, पति और पुत्र द्वारा उसकी रक्षा नहीं होती और वह स्वतंत्र भी नहीं रह सकती। बचपन से ही लड़कियों से यही कहा जाता है-

"भैया अब सोयेगा
जाकर बिस्तर बिछा" बेजगह (अनामिका)

पिता, पति और पुत्र के लिए अपना ही कमरा है, घर में उसकी छाया मात्र है स्त्री। वह पुरुष के लिए बिस्तर बिछाकर स्वयं बेजगह रह जाती है। उस के लिए कोई स्थायी जगह नहीं क्योंकि पुरुषसत्तात्मक समाज की नज़र में वह पराया धन है।

स्त्री विमर्श में पुरुष कवियों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदय प्रकाश ऐसे एक कवि है जिन्होंने 'औरतें' लिखकर स्त्री विमर्श का एक नया रास्ता खोला। इस कविता के ज़रिए उन्होंने पुरुषवादी समाज के जुल्मों को पाठकों के समक्ष खुला कर रखा है।

"वह औरत जो सुहागिन बने रहने केलिए
रखे हुए है करवा चौथ् का निर्जल व्रत
वह पति या सास के हाथों मार दिये जाने से
डरी हुई सोतीसोती अचानक चिल्लाती है" । (औरतें)

शोषित एवं प्रताड़ित स्त्री की हृदयवेदना कविता में नज़र आती है। भ्रूणहत्या का विरोध भी है इसमें। बच्चे का लिंग निर्णय पाप ही नहीं बल्कि अपराध भी है। फिर बेटा होने की ख्वाहिश में कितने दम्पति अपनी बेटियों को बोझ समझकर गर्भावस्था में ही उसकी हत्या कर देते हैं। दुनिया देखने की उस्की लालसा को झकझोर कर देती है।

"इस दुनिया में जन्म लेने से
इनकार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती है उन्हें
वहाँ भी, भ्रूण में उतरती है
हत्यारी कटार।" (औरतें)

स्त्रियाँ जितनी भी आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं, पुरुष प्रधान पिछड़ा समाज उसे उतना ही पीछें धकेलता है। आज हर कोई अस्मिता की लड़ाई लड़ रहा है। नारी भी संघर्षशील है। उसके भीतर अपने अस्तित्व को स्थापित करने में कई सवाल उठते हैं- उन में से एक है; उसकी पहचान पुरुष के साथ रहने में है, या स्वतंत्र होकर जीने में।"

मनुस्मृति की यह पंक्ति "यत्र नार्येस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता" आज केवल भाषण का विषय है, न कि जीवन का। आज हर कहीं किसी न किसी रूप में नारी शोषण हो रहा है। स्त्री शाक्तिकरण के लिए नारा लगानेवाली स्त्री (हिंदी साहित्य में नारी संवेदना पृ. 99)

शक्तियों को पुरुष सत्तात्मक समाज अपनी सारी ताकतें लगाकर दमित या कुचल देता है। लेकिन याद रखिए कि स्त्री शक्ति स्वरूपा है, अपराजिता है, उसकी शक्ति को पुरुषवर्चस्वी समाज सदा के लिए दमित या खंडित नहीं कर सकता, क्योंकि वह हार नहीं मानने वाली है। स्त्री शक्ति से भरपूर समाज नज़दीक ही है। इस में कोई संदेह नही।

संदर्भ

1. स्त्री मुक्ति और कविता-अरुण कमल पृ. 4
2. हिंदी साहित्य में नारी संवेदना पृ. 99

संदर्भ ग्रंथ

1. मनुस्मृति –हिंदुपुराण (3।56)
2. स्त्री मुक्ति की कविता – अरुण कमल पृ।4
3. हिंदी साहित्य में नारी संवेदना – सं.- डॉ. एन जी दौड गौडर और डॉ डी बी पांडे पृ. 99
4. महिला कहानी और कविता –सं प्रो. जयमोहन एम एस पृ167
5. औरतें –उदय प्रकाश
6. बेजगह – अनामिका
7. काव्य सरगम – सं डॉ. संतोष कुमार चतुर्वेदी

पत्रिकाएँ

1. वीणा – श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति
2. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
3. नवनीत- भारतीय विद्याभवन